''मीठे बच्चे – याद में रहकर दूसरों को याद का अभ्यास कराओ, योग कराने वाले का बुद्धि योग इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए''

प्रश्नः- किन बच्चों के ऊपर बहुत बड़ी रेस्पॉन्सिबिल्टी है? उन्हें कौन-सा ध्यान जरूर देना चाहिए?

उत्तरः- जो बच्चे निमित्त टीचर बनकर दूसरों को योग कराते हैं, उन पर बहुत बड़ी रेस्पॉन्सिबिल्टी है। अगर योग कराते समय बुद्धि बाहर भटकती है तो सर्विस के बजाए डिस्सर्विस करते हैं इसलिए यह ध्यान रखना है कि मेरे द्वारा पुण्य का काम होता रहे।

गीतः- ओम् नमो शिवाए...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) राजाई का मैडल लेने के लिए सबकी दिल को खुश करना है। बहुत-बहुत रहमदिल बन अपना और सर्व का कल्याण करना है। हड्डी सेवा करनी है।

2) देह-अभिमान में आकर डिस्सर्विस नहीं करनी है। सदा पुण्य का काम करना है। आप समान ब्राह्मण बनाने की सेवा करनी है। सर्विसएबुल का रिगार्ड रखना है।

वरदानः- मनन शक्ति द्वारा वेस्ट के वेट को समाप्त करने वाले सदा शक्तिशाली भव

आत्मा पर वेस्ट का ही वेट है। वेस्ट संकल्प, वेस्ट वाणी, वेस्ट कर्म इससे आत्मा भारी हो जाती है। अब इस वेट को खत्म करो। इस वेट को समाप्त करने के लिए सदा सेवा में बिजी रहो, मनन शक्ति को बढ़ाओ। मनन शक्ति से आत्मा शक्तिशाली बन जायेगी। जैसे भोजन हज़म करने से खून बनता है फिर वह शक्ति का काम करता, ऐसे मनन करने से आत्मा की शक्ति बढ़ती है।

स्लोगनः- जो अपने स्वभाव को सरल बना लेते हैं उनका समय व्यर्थ नहीं जाता।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

जो निश्चयबुद्धि होगा वह निश्चिंत होगा, उसे किसी भी प्रकार का चिन्तन वा चिन्ता नहीं होगी। क्या हुआ? क्यों हुआ? ऐसे नहीं होता – यह व्यर्थ चिंतन है। निश्चयबुद्धि निश्चिंत वह कभी व्यर्थ चिन्तन नहीं करेगा। सदा स्वचिन्तन में रहने वाला, स्वस्थिति से परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर लेता है।

''मीठे बच्चे – तुम रूप बसन्त हो, तुम्हारे मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकलने चाहिए, जब भी नया कोई आये तो उसे बाप की पहचान दो''

प्रश्नः- अपनी अवस्था को एकरस बनाने का साधन कौन-सा है?

उत्तरः- संग की सम्भाल करो तो अवस्था एकरस बनती जायेगी। हमेशा अच्छे सर्विसएबुल स्टूडेण्ट का संग करना चाहिए। अगर कोई ज्ञान और योग के सिवाए उल्टी बातें करते हैं, मुख से रत्नों के बदले पत्थर निकालते हैं तो उनके संग से हमेशा सावधान रहना चाहिए।

गीतः- रात के राही...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सेन्सीबुल बन सबको बाप का परिचय देना है। मुख से कभी पत्थर निकाल डिस्सर्विस नहीं करनी है। ज्ञान-योग के सिवाए दूसरी कोई चर्चा नहीं करनी है।

2) जो रूप-बसन्त हैं, सर्विसएबुल हैं उनका ही संग करना है। जो उल्टी-सुल्टी बातें सुनायें उनका संग नहीं करना है।

वरदानः- नॉलेज द्वारा रावण के बहु रूपों को जानकर उसकी अट्रैक्शन से मुक्त रहने वाले हिम्मतवान भव

जो बच्चे नॉलेज द्वारा रावण के बहु रूपों को अच्छी तरह से जान गये हैं, उनके आगे वह नजदीक भी नहीं आ सकता। चाहे सोने का, चाहे हीरे का रूप धारण करे लेकिन उसकी अट्रैक्शन में नहीं आयेंगे। ऐसी सच्ची सीतायें बन लकीर के अन्दर रहने का लक्ष्य रख, हिम्मतवान बनो। फिर यह रावण की बहु सेना वार करने के बजाए आपकी सहयोगी बन जायेगी। प्रकृति के 5 तत्व और 5 विकार ट्रांसफर होकर आपकी सेवा के लिए आयेंगे।

स्लोगनः- सेवाओं में सफलता प्राप्त करना है तो निर्माणचित की विशेषता को धारण करो।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

विजयी बनने का फाउन्डेशन है ''निश्चय'', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। अगर फाउन्डेशन कच्चा है तो थोड़ा-सा भी तूफान आयेगा, थोड़ी भी धरनी हिलेगी तो भय होगा कि यह बिल्डिग हमारी गिर नहीं जाए या क्रेक (दरार) नहीं हो जाए। लेकिन निश्चय का फाउन्डेशन पक्का होगा तो निर्भय और निश्चिंत रहेंगे।

''मीठे बच्चे – तुम्हारा धन्धा है मनुष्यों को सुजाग करना, रास्ता बताना, जितना तुम देही-अभिमानी बनकर बाप का परिचय सुनायेंगे उतना कल्याण होगा''

प्रश्नः- गरीब बच्चे अपनी किस विशेषता के आधार पर साहूकारों से आगे जाते हैं?

उत्तरः- गरीबों में दान-पुण्य की बहुत श्रद्धा रहती है। गरीब भक्ति भी लगन से करते हैं। साक्षात्कार भी गरीबों को होता है। साहूकारों को अपने धन का नशा रहता। पाप जास्ती होते इसलिए गरीब बच्चे उनसे आगे चले जाते हैं।

गीतः- ओम् नमो शिवाए...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) देह-अभिमान में आकर किसी भी प्रकार का फैशन नहीं करना है। जास्ती शौक नहीं रखने हैं। बहुत-बहुत साधारण होकर चलना है।

2) आपस में बहुत-बहुत रुहानी स्नेह से चलना है, कभी भी लूनपानी नहीं होना है। बाबा का सपूत बच्चा बनना है। अहंकार में कभी नहीं आना है।

वरदानः- अपने भाग्य और भाग्यविधाता के गुण गाने वाले सदा प्रसन्नचित भव

सभी ब्राह्मण बच्चों को जन्म से ही ताज, तख्त, तिलक जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त होता है। तो इस भाग्य के चमकते हुए सितारे को देखते हुए अपने भाग्य और भाग्यविधाता के गुण गाते रहो तो गुण सम्पन्न बन जायेंगे। अपनी कमजोरियों के गुण नहीं गाओ, भाग्य के गुण गाते रहो, प्रश्नों से पार रहो तब सदा प्रसन्नचित रहने का वरदान प्राप्त होगा। फिर दूसरों को भी सहज ही प्रसन्न कर सकेंगे।

स्लोगनः- एकनामी और इकॉनामी से चलना ही ब्राह्मण जीवन में सफलता का आधार है।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

निश्चय सदा ही निश्चिंत बनाता है और जो निश्चिंत स्थिति में रहकर कोई भी कार्य करता है वह उसमें सफल जरूर होता है क्योंकि निश्चिंत स्थिति में बुद्धि यथार्थ जजमेंट करती है। यथार्थ निर्णय का आधार है – निश्चयबुद्धि, निश्चिंत स्थिति, उसमें सोचने की भी आवश्यकता नहीं है।

''मीठे बच्चे – बाप को ज्ञानी तू आत्मा बच्चे ही प्रिय हैं इसलिए बाप समान मास्टर ज्ञान सागर बनो''

प्रश्नः- कल्याणकारी युग में बाप सभी बच्चों को कौन-सी स्मृति दिलाते हैं?

उत्तरः- बच्चे तुम्हें अपना घर छोड़े 5 हज़ार वर्ष हुए हैं। तुमने 5 हज़ार वर्ष में 84 जन्म लिए, अब यह अन्तिम जन्म है, वानप्रस्थ अवस्था है इसलिए अब घर जाने की तैयारी करो फिर सुखधाम में आयेंगे। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो लेकिन इस अन्तिम जन्म में पवित्र बन बाप को याद करो।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) योग अग्नि से विकर्मों की खाद को भस्म कर पावन बनना है। अब वानप्रस्थ अवस्था है इसलिए वापिस घर जाने के लिए सम्पूर्ण सतोप्रधान बनना है।
2) इस कल्याणकारी युग में बाप समान दु:ख हर्ता सुख कर्ता बनना है।

वरदानः- सदा कम्बाइण्ड स्वरूप की स्मृति द्वारा मुश्किल कार्य को सहज बनाने वाले डबल लाइट भव

जो बच्चे निरन्तर याद में रहते हैं वे सदा साथ का अनुभव करते हैं। उनके सामने कोई भी समस्या आयेगी तो अपने को कम्बाइंड अनुभव करेंगे, घबरायेंगे नहीं। ये कम्बाइन्ड स्वरूप की स्मृति कोई भी मुश्किल कार्य को सहज बना देती है। कभी कोई बड़ी बात सामने आये तो अपना बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं डबल लाइट हो जाओ। तो फरिश्ते समान दिन-रात खुशी में मन से डांस करते रहेंगे।

स्लोगनः- किसी भी कारण का निवारण कर सन्तुष्ट रहने और करने वाले ही सन्तुष्टमणि हैं।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

श्रीमत प्रमाण हर कदम हो तो सदा निश्चिंत रहेंगे और निश्चिंत हैं तो सदा यथार्थ निर्णय देंगे। जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी होंगे। त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिंत रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है।

''मीठे बच्चे – सच्चे सैलवेशन आर्मी बन सबको इस पाप की दुनिया से पुण्य की दुनिया में ले चलना है, सबके डूबे हुए बेड़े को पार लगाना है''

प्रश्नः- कौन-सा निश्चय हर एक बच्चे की बुद्धि में नम्बरवार बैठता है?

उत्तरः- पतित-पावन हमारा मोस्ट बिलवेड बाबा, हमें स्वर्ग का वर्सा दे रहा है, यह निश्चय हर एक की बुद्धि में नम्बरवार बैठता है। अगर पूरा निश्चय किसी को हो भी जाए तो माया सामने खड़ी है। बाप को भूल जाते हैं, फेल हो पड़ते हैं। जिन्हें निश्चय बैठ जाता है वह पावन बनने के पुरुषार्थ में लग जाते हैं। बुद्धि में रहता है, अब तो घर जाना है।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) विद् रिस्पेक्ट पास होने के लिए सजाओं से छूटने का पुरुषार्थ करना है। याद में रहने से ही स्कॉलरशिप लेने के अधिकारी बन सकेंगे।

2) सच्चा-सच्चा पाण्डव बन सबको रुहानी यात्रा करानी है। किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करनी है।

वरदानः- लाइट हाउस की स्थिति द्वारा पाप कर्मों को समाप्त करने वाले पुण्य आत्मा भव

जहाँ लाइट होती है वहाँ कोई भी पाप का कर्म नहीं होता है। तो सदा लाइट हाउस स्थिति में रहने से माया कोई पाप कर्म नहीं करा सकती, सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे। पुण्य आत्मा संकल्प में भी कोई पाप कर्म नहीं कर सकती। जहाँ पाप होता है वहाँ बाप की याद नहीं होती। तो दृढ़ संकल्प करो कि मैं पुण्य आत्मा हूँ, पाप मेरे सामने आ नहीं सकता। स्वप्न वा संकल्प में भी पाप को आने न दो।

स्लोगनः- जो हर दृश्य को साक्षी होकर देखते हैं वही सदा हर्षित रहते हैं।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

निश्चयबुद्धि बच्चे सदा हर्षित और निश्चिंत रहते हैं। चिन्ता खुशी को खत्म करती है और निश्चिन्त हैं तो सदा खुशी रहेगी, जब किसी भी बात में क्यों हुआ, कैसे हुआ, क्या होगा...! यह प्रश्न आते हैं तब चिंता होती है। क्या, क्यों, कैसे – ये चिन्ता की लहर है। कई फिर कहते हैं कि मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है! मेरे पीछे माया क्यों आती है! मेरा ही हिसाब-किताब कड़ा है, क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर। जो इन चिन्ताओं से परे है वही निश्चिंत है।

''मीठे बच्चे – तुम इस समय बाप के साथ सेवा में मददगार बने हो इसलिए तुम्हारा सिमरण होता है, पूजन नहीं, क्योंकि शरीर अपवित्र है''

प्रश्नः- कौन-सा नशा तुम बच्चों की बुद्धि में निरन्तर रहना चाहिए?

उत्तरः- हम शिवबाबा के बच्चे हैं, उनसे राजयोग सीख स्वर्ग की राजाई का वर्सा लेते हैं, यह नशा तुम्हें निरन्तर रहना चाहिए। विश्व का मालिक बनना है तो बहुत खबरदारी से पढ़ना और पढ़ाना है। कभी भी बाप की निंदा नहीं करानी है। किसी से भी लड़ना झगड़ना नहीं है। तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो तो अच्छी रीति धारणा करनी है।

गीतः- जो पिया के साथ है...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सबसे मीठा बोलना है, ऐसी कोई बात नहीं करनी है, जिससे बाप की निंदा हो। देह-अभिमान का दान कर आत्म-अभिमानी और परमात्म-अभिमानी बनना है।

2) जो ज्ञान धन मिलता है, उसका दान करना है, पढ़ाई से राजाई मिलती है इस नशे में स्थाई रहना है। अटेन्शन देकर पढ़ाई पढ़नी है।

वरदानः- साक्षीपन की सीट द्वारा परेशानी शब्द को समाप्त करने वाले मास्टर त्रिकालदर्शी भव

इस ड्रामा में जो कुछ भी होता है उसमें कल्याण भरा हुआ है, क्यों, क्या का क्वेश्चन समझदार के अन्दर उठ नहीं सकता। नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। ऐसे शान की सीट पर रहो तो कभी परेशान नहीं हो सकते। साक्षीपन की सीट परेशानी शब्द को खत्म कर देती है, इसलिए त्रिकालदर्शी बन प्रतिज्ञा करो कि न परेशान होंगे, न परेशान करेंगे।

स्लोगनः- अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों को आर्डर प्रमाण चलाना ही स्वराज्य अधिकारी बनना है।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह, वही बाप समान है। विनाशी धन वाले जितना कमाते उतना समय प्रमाण फिक्र में रहते। लेकिन जिन्हें फेथ है कि हम ईश्वरीय खजानों के मालिक और परमात्म बालक हैं वह सदा ही स्वप्न में भी बेफिक्र बादशाह हैं, क्योंकि उनको विश्वास है कि यह ईश्वरीय खजाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे इसीलिए वह निश्चयबुद्धि, निश्चिंत रहते हैं।

"40 वर्ष की अव्यक्त पालना का रिटर्न – 4 बातें – शुभचिंतक बनो, शुभचिंतन करो, शुभवृत्ति से शुभ वायुमण्डल बनाओ तथा (0) जीरो और हीरो की स्मृति में रहो"

- ज्ञानी तू आत्मा बच्चे तो हैं लेकिन स्नेह की सब्जेक्ट आवश्यक है क्योंकि स्नेही मेहनत कम और मुहब्बत के अनुभव में सहज रहते हैं। ज्ञान बीज है, लेकिन प्रेम का पानी बीज में प्राप्ति के फल लगा देता है।
- जीरो याद दिलाता कि मैं हीरो, सच्चा हीरो, महान हीरो हूँ और हीरो पार्टधारी बन हर कार्य हीरो समान करना है।
- एक बात – सदा शुभचिंतक, कोई की कमजोरी देख वा सुन रहमदिल बन शुभ चिंतक बन उनको सहयोग देना ही है। कमजोरी को नहीं देखना है लेकिन सहयोग देना ही है। दूसरा है शुभ चिंतन। शुभ चिंतन के लिए स्वमान का कोई न कोई अपना टाइटिल मन को होमवर्क दे दो, मन का टाइमटेबल बनाओ, तीसरा है – शुभ वृत्ति। चौथा है – शुभ वायुमण्डल बनाना।
- विश्व परिवर्तक हूँ, यह स्वमान है ना! कोई भी सामने आये उसको खाली हाथ नहीं भेजना, कोई न कोई गुण की, चेहरे से, चलन से, मुख से गुण की सौगात के बिना नहीं मिलना।

वरदान:- सूक्ष्म संकल्पों के बंधन से भी मुक्त बन ऊंची स्टेज का अनुभव करने वाले निर्बन्धन भव

जो बच्चे जितना निर्बन्धन हैं उतना ऊंची स्टेज पर स्थित रह सकते हैं, इसलिए चेक करो कि मन्सा-वाचा व कर्मणा में कोई सूक्ष्म में भी धागा जुटा हुआ तो नहीं है! एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये। अपनी देह भी याद आई तो देह के साथ देह के संबंध, पदार्थ, दुनिया सब एक के पीछे आ जायेंगे। मैं निर्बन्धन हूँ – इस वरदान को स्मृति में रख सारी दुनिया को माया की जाल से मुक्त करने की सेवा करो।

स्लोगन:- देही-अभिमानी स्थिति द्वारा तन और मन की हलचल को समाप्त करने वाले ही अचल रहते हैं।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

समस्याओं का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चैलेन्ज किया है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी लेकिन आप उसे निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से, नथिंग न्यु समझकर पार कर लो तो बेफिकर बादशाह रहेंगे।